

योगतन्त्र-ग्रन्थमाला

[३१]

श्रीमालिनी- विजयोत्तरतन्त्रम्

डॉ. परमहंसमिश्रकृतेन 'नीरक्षीरविवेक' - हिन्दीभाष्येण
कुलपतेः प्रो.राममूर्तिशर्मणः प्रस्तावनया च विभूषितम्

सम्पादकः

डॉ. परमहंसमिश्रः 'हंसः'



वाराणस्याम्

२०५८ तमे वैक्रमाब्दे

१९२३ तमे शकाब्दे

२००१ तमे ख्रिस्ताब्दे

विषयक्रमः

प्रथमोऽधिकारः

पृष्ठाङ्काः

१. मङ्गलाचरण, श्रीमालिनीविजयोत्तरतन्त्र का उत्स, तारकान्तक-
जिज्ञासु देवमहर्षि संवाद १-४
२. उमादेवी का सिद्धयोगेश्वरी तन्त्र और मालिनीविजयोत्तरतन्त्र
विषयक प्रश्न ५-६
३. अघोर से (हेयोपादेय विज्ञान सिद्ध) इस तन्त्र की प्राप्ति का कथन
और उपादेय षट्क ७-८
४. हेयचतुष्क और इसके त्याग का फल ९-१०
५. सृष्टिसर्वज्ञ की इच्छा से सर्वप्रथम शिव द्वारा आठ विज्ञान केवलों
की सृष्टि १०-११
६. मन्त्र, मन्त्रेश्वर, मन्त्रमहेश्वर, विज्ञान केवल, प्रलय केवल और
सकल सृष्टि ११-१२
७. मल (अज्ञान) की संसाराङ्कुर कारणता, धर्माधर्मात्मक कर्म,
भोगेच्छा का कारण ईश्वरेच्छा, सकल पुरुष की भोगेच्छा की
पूर्ति के लिये मन्त्रमहेश्वर द्वारा माया में प्रवेश कर जगत्
की सृष्टि १२-१३
८. माया की परिभाषा, कला की उत्पत्ति, कला के प्रभाव से पुरुष का
सकलत्व, विद्या, राग, की उत्पत्ति और परिभाषा १३-१४
९. नियति और काल की उत्पत्ति और परिभाषा, कला से अव्यक्त
(प्रधान) और इसके गुणों से बुद्धि, बुद्धि से त्रिधा अहङ्कार,
तैजस अहङ्कार से मन, वैकारिक अहङ्कृति से इन्द्रियाँ और तामस
अहङ्कार से तन्मात्राओं की सृष्टि, ज्ञान और कर्मेन्द्रियाँ, कला से क्षिति
पर्यन्त संसारमण्डल १४-१५
१०. एक सो अट्ठारह रुद्रों की मन्त्रेश्वर पद पर नियुक्ति, ब्रह्मा इत्यादि
पर भी इनका नियन्त्रण, ब्रह्मादि स्तम्भ पर्यन्त जगत्, साढ़े तीन
करोड़ मन्त्र शिव द्वारा ही नियुक्त, शान्ता शक्ति का सुपरिणाम १६-१७

११. रुद्रशक्ति समाविष्ट शिष्य का शिव के अतुग्रह से सद्गुरु के शरण में प्रस्थान, शाङ्करी दीक्षा से मरणोपरान्त मुक्ति १७-१८
१२. योग दीक्षा से शाश्वत पद की प्राप्ति, शुद्ध स्वात्म में अवस्थान, गुरु और साधक का कर्तव्य १८-१९
१३. हेयोपादेय विज्ञान रूप ज्ञेय सर्वस्व के ज्ञान से सर्वसिद्धि २०

द्वितीयोऽधिकारः

१४. धरादि तत्त्व प्रपञ्च, पाञ्चदश-सिद्धान्त, जल तत्त्व से मूलपर्यन्त तत्त्व, पुरुष से कलापर्यन्त तेरह तत्त्व भेद, विज्ञानकेवल के नवभेद, मन्त्र के सात, मन्त्रेश्वर के पाँच, मन्त्रमहेश्वर तीन, और अभेद शिव तत्त्व २१-२३
१५. भुवन माला का ज्ञान और उसका सुपरिणाम, सर्वतत्त्वज्ञ शिवरूप का मन्त्रवीर्य प्रकाशकत्व, शाश्वत रुद्रशक्ति समावेश और उसके चिह्न २३-२५
१६. रुद्रशक्ति समावेश के १. भूत, २. तत्त्व, ३. आत्म, ४. मन्त्र और ५. शक्ति रूप पाँच भेद, कुल पञ्चाशत्प्रकारता २५-२६
१७. आणव, शक्त और शाम्भव समावेश, समावेश के भेद, संवित्तिफल-भेद निषेध, जाग्रत्स्वप्नादि भेद से सर्वावेश क्रम का ज्ञान २७-२८
१८. स्वरूप, शक्ति और सकलात्मक जाग्रत्, स्वप्न सुषुप्ति बोध, तुर्यबोध, तुर्यातीत ज्ञान, मन्त्र मन्त्रेश्वर विज्ञानाकल प्रलयाकल इत्यादि के स्वरूप २९-३१
१९. (जाग्रदादि अवस्थाओं) के संज्ञा भेद, अध्वाभेद, विज्ञानाकल पर्यन्त आत्मतत्त्व, ईश्वर पर्यन्त विद्यातत्त्व और शेष शिवतत्त्व ३२-३४
२०. अण्डचतुष्टय, निवृत्ति कला धारिका शक्तिमयी पृथ्वी, पृथ्वी तत्त्व के कालाग्नि से वीरभद्र पर्यन्त सोलह भुवन, प्रतिष्ठा रूप आप्यायनी कला के ५६ भुवन, बोधिनी विद्या कला के वर्ण, तत्त्व और २८ भुवन तुर्याकला, तीन तत्त्व एक पद और १८ भुवन आदि षड्विध अध्वा शुद्धाशुद्ध जगत्, पतिचतुष्टय और ऊर्ध्व की परिभाषा ३५-३८

तृतीयोऽधिकारः

२१. शिवादि वस्तु के श्रवण की पार्वती की इच्छा, वाचक मन्त्र, इच्छा शक्ति और ज्ञेय की परिभाषा ३९-४०

२२. ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति, अर्थोपाधि और इसके द्वारा दो, नौ और पचास भेदों का प्रकल्पन, बीज स्वर और योनि व्यंजन, शतार्ध-किरणोज्ज्वला मातृका शक्ति ४१-४२
२३. बीजरूप शिव, योनिरूप शक्ति, योन्यात्मक शक्तिमयता, बीजरूप शिव की वाचिका वर्गाष्टक और मातृस्वर्यादि शक्तियाँ ४३-४४
२४. षोडश बीजों के वाचक षोडश रुद्र, शक्तिरूप ३४ योनिवर्णों के वाचक ३४ रुद्र, अनन्त भेद, अघोर का परमेश्वर द्वारा उद्बोधन, वर्णोत्पत्ति का रहस्य ४४-४६
२५. साधकेन्द्रों की सिद्धि के आधार, रुद्राधिष्ठित सभी वर्ण, वर्णों से वेदादिवाङ्मय का प्रवर्तन, कार्य भेद से शिवशक्ति का त्रैविध्य, अपरा परापरा और पराशक्ति भेद, शम्भु की एकमात्र शाङ्करी शक्ति ४७-४८
२६. शाक्तशरीरार्थ मालिनोन्यास, मालिनी के क्रमिक वर्ण और न्यास के अंग ४९-५१
२७. विद्या और मन्त्रों का उद्धार, परापरा, अपरा और परा-मन्त्रोद्धार-प्रक्रिया, परामन्त्र के उच्चारण मात्र से मन्त्रसाम्मुख्य, परामन्त्र की अधिकारिकता ५१-५४
२८. आठ योगिनियाँ, सप्तैकादशवर्णात्मिका विद्या, विद्याङ्ग हृदय-मन्त्र, ब्रह्मशिरस्-मन्त्र, रुद्राणी, पुरुषट्पत्, पाशुपत मन्त्र ५५-५९
२९. पञ्चचक्र, इन्द्रादि वाचक वर्ण, ऋषियों की योग-मन्त्र विषयक जिज्ञासा का कार्तिकेय द्वारा समाधान, योगी की परिभाषा, योग के विना शाङ्करी दीक्षा की अधिकारिता का निषेध, शिवदीक्षा से मुक्ति, अभिन्न और भिन्न योनि मालिनी के अङ्ग न्यास, तत्त्व न्यास, ५७-६३

चतुर्थोऽधिकारः

३०. परापरा, अपरा और परा मन्त्रों के तत्त्वक्रम से पदों के स्वरूप ६४-६६
३१. ज्ञानी और योगी का मोक्षप्रदत्व । श्रुत, चिन्तामय, और भावनामय, तीन प्रकार के ज्ञान और इनकी परिभाषायें, चतुर्विध ज्ञानवान्, चतुर्विध योगी ६६-७०

पञ्चमोऽधिकारः

३२. भुवनाध्वाक्रम, अवोचि, कुम्भीपाक और रौरव, पाताल, भूर्भुवः स्वर्लोक, चतुर्विध भूतग्राम क्रम, कालाग्नि भुवन, सौम्यादि भुवन, शतस्र

(घ)

- भुवन, पश्यष्टक, गुह्याष्टक, पवित्राष्टक, स्थाण्वष्टक, देवयोन्यष्टक,
योगाष्टक, पुरुष, विद्या, कला, काल तत्त्व के भुवन ७१-७६
३३. अशुद्ध विद्या, ईश्वर और सकल तत्त्वों के कुल ११८ भुवन, इनकी
शुद्धि अशुद्धि ७६-७८
- षष्ठोऽधिकारः**
३४. ज्ञान दीक्षा में वस्तु व्यवस्थिति, षट्त्रिंशत्तत्त्व भेद से न्यास, पञ्च-
तत्त्व न्यास, तत्त्वविधि, कालाग्नि से वीरभद्रपुर पर्यन्त पुरषोडशक,
गुल्फान्त न्यास ७८-८२
३५. ८४ अङ्गुल शरीर में अङ्गुल भेद से तत्त्व व्याप्ति, अपर, परापर
और परविधि, प्रधान व्याप्ति, ध्वन्यात्मक और वर्णात्मक भेद, पद, मन्त्र
और कालादि का त्रितयत्व, न्यासयुक्त गुरुदीक्षा का उपसंहार ८२-८६
- सप्तमोऽधिकारः**
३६. मुद्रा वर्णन क्रम में २६ मुद्राओं का क्रमिक वर्णन ८७-९५
- अष्टमोऽधिकारः**
३७. क्रम, यागसदन प्रक्रिया, अष्टविध स्नान, यागसदन प्रवेश विधि,
द्वारपति पूजन, प्रवेश समय, शिष्य स्वरूप, शिवबिन्दुवत्स्वात्मचिन्तन,
विद्यामूर्तिप्रकल्पन, नवात्मक पिण्डविधि, ९६-१०३
३८. वक्त्रप्रकल्पन में न्यास और मूर्त्यङ्ग प्रकल्पन से दीक्ष्य की दिव्यता १०३-१०४
३९. भैरव सद्भाव न्यास, १. मूर्तिन्यास, २. सृष्टि ३. त्रितत्त्व, ४. अष्टमूर्ति,
५. भैरवसद्भाव और ६. अङ्ग न्यासात्मक षोडान्यास, शाक्त न्यास, १०४-१०५
४०. परादित्रितय न्यास, अघोर्याष्टक न्यास, मातृसद्भाव न्यास, रुद्रशक्ति
समावेश की प्रतिष्ठा, अङ्गप्रकल्पन, यामल न्यास, पञ्चविध न्यास,
याग द्रव्य प्रोक्षण और शोधन १०५-११०
४१. स्वात्मपूजन, अन्तःकृति प्रक्रिया, मानस याग प्रक्रिया ११०-११६
४२. त्रिशक्तिक एकदण्डात्मक त्रिशूल, शाम्भव, शाक्त और और आणव शूल
का ज्ञान आवश्यक, शक्ति चक्र का पृथक् याग, खेचरी मुद्रा और
अवनीतल से उत्पत्ति, महास्त्र से धान्यादि निक्षेप, पञ्चगव्य, भूमि
संप्रोक्षण, ११६-११८

४३. वास्तुयाग प्रक्रिया में मातृका पूजन, होम जप, कलश (प्रधान)
स्थापन, इन्द्रादि पूजन, वार्धानी की अविच्छिन्न धारा, कुण्ड प्रयोग
अग्नि आनयन, चरु पाक आदि ११८-१२४
४४. अन्तःकृति की अपर प्रक्रिया १२५-१२७
४५. स्वप्नविचार, शुभ, अशुभ स्वप्न, निष्फल चेष्टा का निषेध, समय
श्रावण और विसर्जन, सामय कर्म समापन १२७-१३०

नवमोऽधिकारः

४६. अधिवासन, सूत्रास्फालन पूर्वक मण्डल निर्माण की विस्तृत विधि,
गुरुकृत संकल्प (इलो० ३७) सितोष्णीष धारण, शिवहस्त विधि,
आलम्भन, ग्रहण, योजन, विनियोग, पाशच्छेद, शिष्य द्वारा स्वात्म-
शिवत्व भावन १३०-१४४
४७. इतराश्व विधि, अध्वाशोधन के पश्चात् दीक्षा, शैवात्मभावमय चिन्तन,
शिष्य मण्डल और वल्लि का एकत्वभावन, स्वव्याप्ति ध्यान, पाशपञ्जर
का बन्ध, यजन, तर्पण और अन्य कार्य, गर्भाधान, १४४-१४७
४८. पिवनी पूर्वक मन्त्र और परामन्त्रों से दश आहुतियाँ, अपरा से
पाशच्छेद, भुवनेश का आवाहन और उनसे प्रतिबन्ध निराकरण की
प्रार्थना, उत्क्षेपण, मध्याहुति, पाशुपत, विलोमादिविशुद्धयर्थ पाशुपतमन्त्र
से आहुतियाँ, वागोशी विसर्जन, बाहुपाशच्छेदन १४७-१४९
४९. माया, विद्यादि सकलान्त पिवन्यष्टक संयोजन, निष्कल में परा कार्य,
सकलान्त विशुद्धि और शिखाच्छेद, शिष्य का आत्मस्थोकरण, गुरु
द्वारा शिष्य का परतत्त्व में नियोजन शिवयोग विधि, सर्वाश्व संशुद्धि १४९-१५२

दशमोऽधिकारः

५०. योग्य शिष्य का साधना प्रक्रिया में नियोजन, सकर्मकाण्ड सर्वराजोप-
चारपूर्वक अभिषेचन, मन्त्रप्रदान विधि, आचार्य का अभिषेक, मन्त्र-
सिद्धयर्थ मन्त्रव्रत का आचरण, विद्येश्वर जप, तर्पण, रुद्राणी, पुरुषटुत
महापाशुपतादि मन्त्र जप, मांस मदिरादि द्रव्यों के विकल्प, अर्घ्यदान
पुनः जप, जपफल १५३-१५९
५१. वीरचित्तविधि, योगेश्वरी शुभागमन, तदनुकूल वित्त आचरण से
लाभ, आचार्य द्वारा मौनव्रत, त्रिशक्तिपरिमण्डल याग, चीर्णव्रत मन्त्रों
का निग्रहानुग्रह सामर्थ्य, १५९-१६१

५२. ह्रीं अक्षह्रीं, ह्रीं नफह्रीं मन्त्र न्यास से शक्तिमूर्ति, प्रक्रियापूर्ति, १६१-१६२
एकादशोऽधिकारः

५३. भुक्ति-मुक्तिकरी दीक्षा, सद्यःप्रत्ययकारिका दीक्षा में कुल मण्डल आदि के अप्रयोग का निर्देश, यागसदन में प्रवेश, महामुद्रा प्रयोग, मालिनी का अनुलोम विलोम प्रयोग, शक्ति से अमृतत्व नयन परासंपुटित मालिनी का प्रयोग, गणपति पूजन, माहेश्वरी पूजन कुलशक्ति विनिवेश, १६३-१६६

५४. सर्वयोगिनी चक्राधिप प्रयोग, वीराष्टक यजन, श्रीकारपूर्वक नामकरण, शिवहस्तविधि, चरु, १६ अङ्गुल का दन्तकाष्ठ, शक्तिपात परीक्षण, कुलेश याग, शिष्य के शोधन के विविध प्रयोग, अनामय शक्ति की शिवसमाहिती का चिन्तन, १६६-१७०

५५. शक्तिपात से शिष्य में आनन्द, उद्भव, कम्प, निद्रा, घूर्ण के लक्षण, उपलवत् त्याज्य शिष्य, १७०-१७२

५६. पृथक् तत्त्व विधि से दीक्षा, कुलक्रमेष्ट मुमुक्षु-बुभुक्षु के विभिन्न प्रयोग, अष्टदीप प्रयोग, शंख में शिवपूजन, शिवहस्त विधि से अभिषेक, अधिकारार्थ आचार्य दीक्षा का स्वरूप, मोक्षप्रद गुरु, स्वक्रिया सम्पादनार्थ गुरु का आदेश १७२-१७४

द्वादशोऽधिकारः

५७. योगाभ्यास विषयक देवीप्रश्न, भृगूह, गुहा, निर्जन, निःस्वन, निर्बाध स्थान, लक्ष्यवेध, चित्तवेध प्रक्रिया से योगाभ्यास, षोडशलक्ष्यभेद, एकफलवान् चित्तभेद, १७४-१८०

५८. गुरु द्वारा कृतावेश विधिक्रम योगी के योगाभ्यास का पृथक् विधान, २७ दिन के अभ्यास से गुरुत्व, छः मास में वज्रदेहत्व, नवनाग पराक्रमत्व, पार्थिवो धारणा का द्वितीय प्रयोग, तृतीय प्रयोग, चतुर्थ प्रयोग, पञ्चमप्रयोग, अन्य विभिन्न प्रयोग और बुभुक्षु के फलवासना-नुसार दीक्षा का आदेश, योजित होने के अनन्तर वहाँ से अनिवर्त्तन का अनुभव १८०-१८६

त्रयोदशोऽधिकारः

५९. (अ) वारुणी धारणा के प्रयोग और फल, सप्ताह, मास, वर्ष, तीन वर्ष प्रयोग के फल, जल के ऊपर सव्यापार चिन्तन का फल, जलावरण विज्ञान की अनुभूति, जलोपरि निर्व्यापार प्रयोग से जलतत्त्वेश

का दर्शन, जलावरण संभूत विद्येश्वरत्व की प्राप्ति, कुल पञ्चदश
भेदमयी वारुणी धारणा

१८७-१९२

(आ) आग्नेयी धारणा—सप्ताह प्रयोग, तीन वर्ष में अग्नि की
समानता, त्रिकोण मण्डलारूढ़ अनुचिन्तन सव्यापारादि भेद के फल,
सप्ताह मास छः मास तीन वर्ष के प्रयोग के फल, विभिन्न प्रयोग १९२-१९६

(इ) वायवी धारणा, छः मास, तीन वर्ष, के प्रयोग के फल १९६-१९९

(ई) व्योमधारणा—पहली विधा (श्लोक ४४), मासपर्यन्त प्रयोग के

फल, छः मास, तीन वर्ष में व्योम ज्ञान, विभिन्न प्रयोग और फल, १९९-२०२

६०. भूतवेश साधना, धारणा पञ्चक सिद्धि के अन्य फल, एक धारणा
की सिद्धि के बाद ही दूसरी में प्रवेश का आदेश, विविध सिद्धियों का
निश्चय

२०२-२०४

चतुर्दशोऽधिकारः

६१. तन्मात्रधारणायें और उनके फल—

अ-गन्धतन्मात्र धारणा श्लोक १-१०

आ-रसतन्मात्र धारणा श्लोक ११-१८

इ-रूप तन्मात्र धारणा श्लोक १९-२७

ई-स्पर्श तन्मात्र धारणा श्लोक २८-३३

उ-शब्द तन्मात्र धारणा श्लोक ३४-४३

२०५-२१६

पञ्चदशोऽधिकारः

६२. इन्द्रिय धारणा और फल—

अ-वाग्धारणा (श्लोक २-६) आ-पाणि प्रयोग (श्लोक ७-९) इ-चरणधारणा

प्रयोग (१०-११) ई-वायुधारणा प्रयोग (१२-१३) उ-लिङ्गधारणा (१४-१५)

ऊ-रसनाधारणा (१६-१९) ऋ-घ्राणधारणा (२०-२३)

६३. ऋ-चक्षु धारणा—(२४-२९) ए-त्वक् प्रयोग (३०-३३)

ऐ-श्रोत्रेन्द्रिय (३४-३६) ओ-मनोवती (३७-४७)

२१७-२३२

षोडशोऽधिकारः

६३. अ-गर्वमयोधारणा, आत्मदेहधारणा और फल (१-७)

आ-बुद्धितत्त्व की धारणा (८-१२) इ-दिव्यदृष्टि सिद्धि (१३)

गुणज्ञान सिद्धि (१४) हृदय में सूर्यध्यान से सिद्धि (१५-१६)

६४. क्षमादि तत्त्वों की धारणायें—पृथ्वी से ईश्वरपदान्त धारणायें और इनके फल (ब्रह्मलोक १७-६८) २३३-२५४

सप्तदशोऽधिकारः

६५. प्राणायाम—पञ्चधा (१. पूरक, २. कुम्भक, ३. रेचक, ४. अपकर्षक, और ५. उत्कर्षक) इनकी परिभाषायें, तीन प्रकार के प्राणायाम, (अधम, मध्यम और ज्येष्ठ) प्राणायाम योग की चार धारणायें (शिखी, अम्बु, ईश और अमृत), हेयोपादेय विज्ञान का लाभ, समान रूप से योगाङ्गत्व, मनोध्यान (भावनामय शवासन प्रयोग, शाश्वत पद की प्राप्ति, २५५-२६१

६६. कालरात्रिरूप मर्मनिष्कृन्तनी धारणा और उसके प्रयोग, अन्य वायु भ्रमण योग प्रयोग २६२-२६५

अष्टादशोऽधिकारः

६७. लिङ्ग पूजन के सन्दर्भ में निर्देश, आध्यात्मिक लिङ्ग ही पूज्य, लिङ्ग में चराचर लीनता। हृदय के स्पन्दन में चित्तकी समाप्ति, कम्प, उद्भव आदि की अनुभूति, हृदय से ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त उत्थित लिङ्ग में सर्वमन्त्र समुदाय का दर्शन, छः माह में सर्वसिद्धि, शैवमहालिङ्ग, लिङ्ग विज्ञान, इस से अधिष्ठित सभी मन्त्र २६६-२७०

६८. रौद्रभाव से योग का फल, कृत्रिम योग, हृदय में दीप्ति दर्शन, दिव्य ज्ञान, ललाटाग्र तेजोदर्शन का सुफल २७०-२७२

६९. शक्त्यावेश के मास मात्र अभ्यास का फल, शाक्त तेज का दर्शन, इन्द्रियार्थ विज्ञान की उपलब्धि, निश्चल मन से तन्मयता के फल-स्वरूप सर्वगतभावोपलब्धि २७२-२७४

७. जीवका लयस्थान ध्यातव्य, चिच्छक्ति का दर्शन २७४-२७५

७१. सिद्धयोगेश्वरी मत, शिवसंवित्ति में चित्त का स्थिरीकरण, दिव्य चिह्न दर्शन, ब्रह्मरन्ध्र प्रवेश और स्नपन की अनुभूति २७५-२७७

७२. यजन, नैवेद्य, जप, होम, ध्यान आदि की वैचित्र्यानुभूति, हृदय या द्वादशान्त में मन का स्थिरीकरण, सर्वज्ञता का फल २७७-२७९

७३. नाभिकन्द से शिखावधि रहिम रूप का दर्शन और विकास, संवित्ति का उदय और सर्वज्ञता का वरदान, इसके अभ्यास से श्रेयः सिद्धि, न्याय पूर्वक ज्ञानोपार्जन उचित २७९-२८१

७४. विज्ञानापहृति श्लोक (५८-६६) गुरु द्वारा विशोधन की सम्भावना,
प्रायश्चित्त के प्रकार, गुरु की शिष्य पर कृपा, अकार्य से निवारण,
न मानने पर गुरु द्वारा एकान्त सेवन, शास्त्र की प्रक्रिया का ज्ञान, २८१-२८८

एकोनविंशोऽधिकारः

७५. अभिन्न मालिनी साधन, आदि में कुलचक्र का यजन, पराशक्ति का
१ लाख जप, छः लाख जप, दशांश होम, वाक्सिद्धि रूप फल (श्लो० १८)
नगर में पाँचरात्रि पत्तन में तीन रात, ग्राम में एक रात का निवास, कुल-
विज्ञान, मन्त्रदेवता का ज्ञान और अपने नाम से पूज्यापूज्य का ज्ञान,
स्ववर्ग्य समय का अनुचिन्तन— २८८-२९३

७६. स्वकुल, देशकुल आदि के अनुसार व्यवहार, गुप्ताचार, दृढव्रत साधन
द्वारा योगिनी मेलन साधन और सिद्धि, ग्राम पत्तन नगरविषयक
अन्य मत, लोकयात्रा का परित्याग, नाभिचक्र में कुलात्मक ध्यान,
योगिनी कुल का अविर्भाव, २९३-२९६

७७. यकाराद्यष्टक चिन्तन, योगिनी पद की इच्छा से साधना का स्वरूप,
पिण्डस्थ बुद्ध, अकस्मात् महामुद्रा का ज्ञान, प्रबुद्ध स्थिति, सुप्रबुद्ध,
कादिहान्ताक्षर चिन्तन, षोडशार, ७२ हजार नाडिचक्र के ध्यान से
पिण्ड, पिण्डस्थ, पदस्थ, पद, सर्वतोभद्र साधना प्रक्रिया और फल, २९६-३०१

७८. रूपस्थ साधना, रूपातीत, कुलचक्र व्याप्ति, वर्णभेद, हृदय में शक्ति
का स्वरूप चिन्तन और उसका फल, उच्छिन्न शास्त्रों का भी ज्ञान
विद्येश्वरत्व समान सिद्धि, ३०१-३०५

७९. प्रतिवर्ण विभेद साधना, शरीर में अङ्गनुसार वर्ण ध्यान और साधना,
वर्णव्याप्तिज्ञानोपलब्धि ३०५-३०६

८०. समस्त अक्षर पद्धति साधना और फल, पिण्डाकृष्टिकरी साधना,
वश्यादि प्रयोगों के परिणाम, अक्षमालिका निर्माण, पराबीज पुटित
मन्त्र जप, इसके विविध मारणादि प्रयोग, ३०६-३१२

८१. वाक्सिद्धि, मालिनी का उल्काकार चिन्तन, विश्व का उसके द्वारा
वेष्टन, वश्य की सर्वोत्तम साधना, एकवर्ष की साधना का फल,
दिव्यशक्तियों द्वारा अपने-अपने ज्ञान का दान, कौलिक विधि का
उपसंहार ३१२-३१७

विंशोऽधिकारः

८२. शाक्तविज्ञान का आरम्भ, पिण्ड ही शरीर, शरीर का वैशिष्ट्य, पद की परिभाषा, रूप की परिभाषा, रूपातीत साधना का स्वरूप, और फल, साधना में आनन्द आदि का लक्षण, स्थूल पिण्डादि के उपाश्रय में चार भेद, भौतिक, आतिवाहिक के फल, पद, रूपोदयाति विज्ञान (श्लो० १९) ३१७-३२३
८३. प्रकाशकरणी अवस्था, रूपस्थ, ज्ञानोदयावस्था, रूपातीत अवस्था, अन्य भेद, त्रिविध, चतुर्विध भेद, पिण्डादि भेद से शिवज्ञान, पराण चिन्तन, सात दिवसों में रुद्रशक्तिसमावेश, लक्षण, अभ्यास परित्याग का निषेध, एक वर्ष में योगसिद्धि, मातृसद्भाव, रतिशेखर ध्यान ३२३-३२८
८४. अधोर्याद्यष्टक ध्यान, माहेशो आदि, अमृतादि रुद्रों के दर्शन का फल, प्राणस्थ रुद्र का परासन, आसन विज्ञान, द्वादशार चक्र, अष्टार ध्यान-स्मरण, २५० भेद भिन्न चक्र और इनकी साधना, ३२८-३३०
८५. द्वादश शक्ति और शक्तिमन्त, षण्ठ वर्जित द्वादश देवियों से अधिष्ठित स्वर, षोडशार के शक्ति शक्तिमन्त, अष्टार के शक्तिमन्त, तीन अष्टक, बिन्दु रूप मकार, षडर मन्त्र, शक्ति और शक्तिमन्त, अकारादि क्षकारान्त वर्ण और उनकी शक्तियों का योगियों और मन्त्रजापकों द्वारा साधन, ३३०-३३५

एकविंशतितमोऽधिकारः

८६. व्याधियों और मृत्युनाशक शिवज्ञानामृत का षोडशार में स्मरण, रसना का लम्बिका में संयोजन, नमकीन लार थूक कर स्वादु का आस्वादन, छः मास की साधना से मृत्युजित् अवस्था की प्राप्ति, दूसरी संक्रान्ति अवस्था, मृत या जीवित शरीर में प्रवेश की साधना, निरोध, घट्टन, प्रतिमा संचलनादि लक्षण, संक्रान्ति, भेदमयो साधना का स्वरूप, स्वदेह रक्षण अनिवार्यतः आवश्यक, ३३५-३४१
८७. सद्यः प्रत्ययकारक प्रयोग, चन्द्राकृष्टिकर प्रयोग, चन्द्रबिम्ब में आप्यायनकरी देवी के दर्शन, मूख में आकर्षण, निगरण, सुपरिणाम, दूसरा प्रयोग ३४१-३४६

द्वाविंशतितमोऽधिकारः

८८. सूर्याकृष्टिकर प्रयोग, साधना के स्वरूप और सुफल रूप सिद्धयोगी-ह्वरेस्वरत्व की प्राप्ति, अन्यसुफल, खेचरत्व की प्राप्ति ३४७-३५२

८९. फादिनान्त मालिनी प्रयोग, साधना, त्रिशूल प्रयोग और मेदिनी त्याग रूप फल, विद्या से स्थान का आवेष्टन व फल, लाभ, छः मास तक मेदिनी त्याग, छः मास की साधना और खेचरी पतित्व प्राप्ति, खगेश्वरी मुद्रा, पर्यङ्कासन प्रयोग, वस्तु दर्शन फल, स्वस्तिकासन प्रयोग और साधना व फल

३५२-३५६

त्रयोविंशतितमोऽधिकारः

९०. सद्योपलब्धि जनक प्रयोग अनावृतध्वनिश्रवण फल, पक्षिगणध्वन्यर्थ-ज्ञान, दूरश्रवण विज्ञान, ग्रहण प्रयोग, संवित्तिसमुदय, मासपर्यन्त साधना का फल, छः मास की साधना

३५७-३६०

९१. जाति प्रयोग, आसन, बीजमन्त्र, दशदल कमल के पत्र, केशर, कर्णिका के बीज के साथ शक्तियों का अवस्थान, अग्निमण्डल, सूर्य प्रमाण मण्डल और सोम प्रमेय मण्डल, इनमें बीजाक्षर प्रयोग

३६०-३६२

९२. अनुत्तासन योग और छः नमः आदि जातियाँ, प्रायश्चित्तादि में अखण्ड माला का प्रयोग, सदा भ्रमणशील साधकों के लिये विलक्षण प्रयोग द्व्यक्षरा विद्या का सार्वत्रिक और सार्वकालिक प्रयोग, इस विद्या से स्थानवेष्टन व फल

३६२-३६५

९३. एक लाख जप और फल, विषक्षयकरी विद्या के रूप में इसका प्रयोग, स्त्री वशीकरण में प्रयोग

३६५-३६६

९४. षडुत्थासन संस्थान प्रयोग और फल, सर्वचक्र विधि, हृच्चक्र प्रयोग साधन फल, सुप्तज्ञान में इसका उपक्रम, सिद्धयोगीश्वरी मत

३६६-३६८

९५. इससे बढ़कर कोई ज्ञान नहीं की घोषणा, इसका ज्ञाता साक्षात् शिव, सर्वथा योगरत साधकों को ही यह ज्ञान उपादेय, कार्तिकेय से इस ज्ञानामृत की उपलब्धि, उपसंहार,

३६८-३७१

९६. ग्रन्थसमाप्ति

३७१-३७१